लोककथाएँ बिहार की

1 ढपोर शंख

एक बाबाजी थे। वे बड़ी-बड़ी बातें बनाते थे। उनकी खूबी यह थी कि कोई कुछ पूछता तो बड़े-बड़े उपाय बताते, लेकिन उनसे कोई हल नहीं निकलता। लोग उनकी इस आदत से बड़े परेशान थे।

एक बार बाबाजी एक जंगल से गुजर रहे थे, रास्ते में उन्हें एक शंख पड़ा मिला, उन्होंने शंख उठा लिया। घर आकर उसे गंगाजल से धो-पोंछकर उसकी पूजा की और उसे जोर से बजाया। शंख से आवाज आई, ''सुखी रह बचवा! जो मन में हो, माँग ले।''

बाबाजी को तब बड़ी भूख लग रही थी। उन्होंने शंख को प्रणाम किया और बोले, ''मुझे बड़ी तेज भूख लगी है, खूब बढ़िया भोजन कराओ।''

बाबाजी की प्रार्थना सुनकर शंख बोला, ''लड्डू खा, पूड़ी खा, इमरती खा, जलेबी खा, बरफी खा, पेड़ा खा।''

बाबाजी खुश होकर बोले, ''बस, बस! पहले इतना ही दे दो।'' बाबाजी इंतजार करने लगे,

लेकिन कुछ नहीं आया। बाबाजी ने फिर शंख से प्रार्थना की। शंख ने फिर लंबी-चौड़ी बात हाँक दी, लेकिन कुछ आया नहीं। बाबाजी समझ गए कि वह शंख भी उन्हीं की तरह लंबी-चौड़ी हाँकनेवाला है, जिसका कोई मतलब नहीं है—उन्हीं की तरह ढपोरशंख।

✿

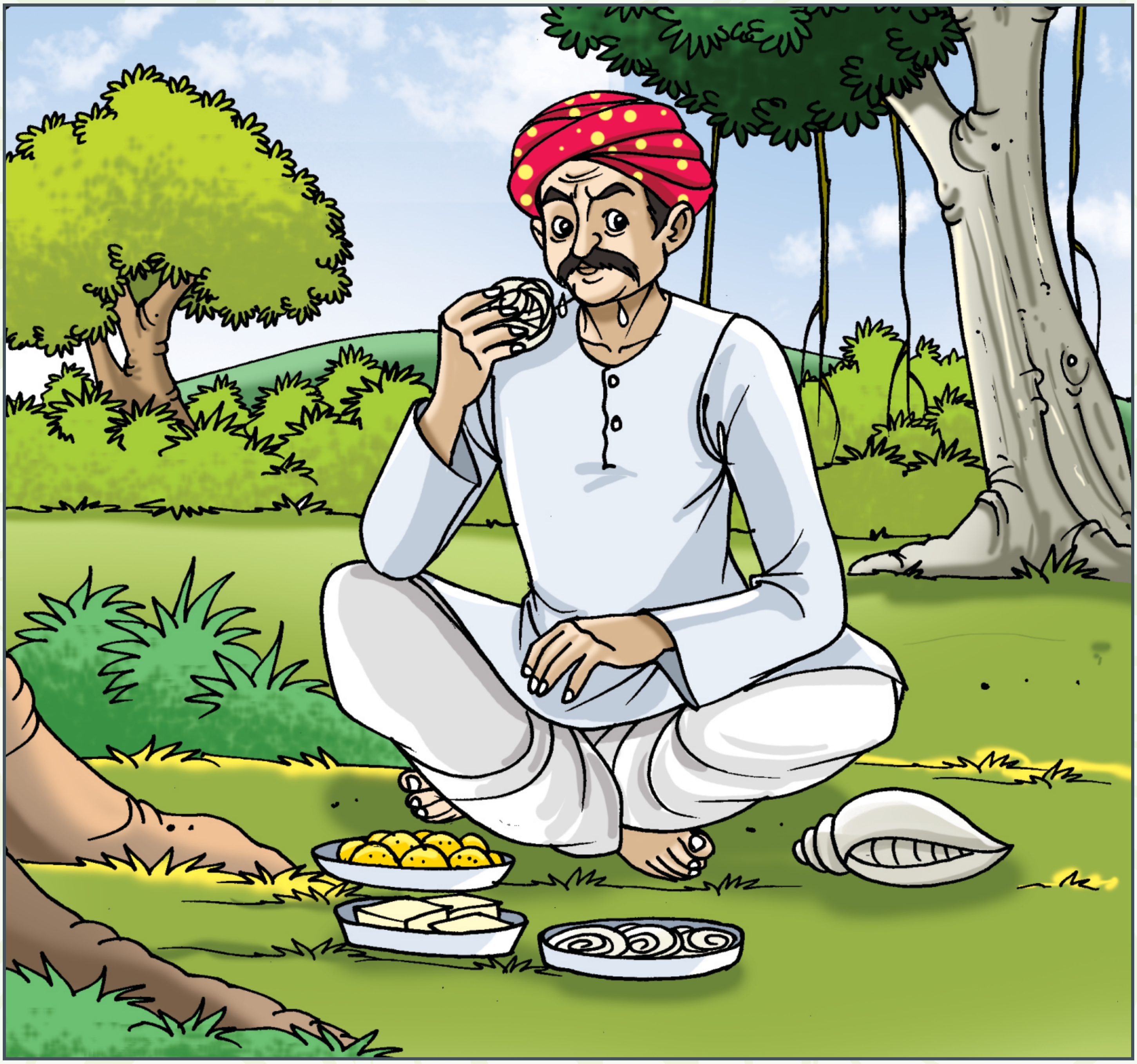

2 जिसका काम उसी को साजे

एक धोबी था, उसका एक कुत्ता था। एक दिन गुस्सा होकर धोबी ने कुत्ते को खाना नहीं दिया। रात में कुत्ता भूखा-प्यासा बैठा था, पास ही धोबी का गधा बँधा था। उसी समय धोबी के घर में चोर घुस आए। कुत्ता शांत बैठा रहा तो गधा उसे दुतकारते हुए बोला, ''तू बिल्कुल नमकहराम हो गया, मालिक के घर में चोर घुस आए और तू भौंका नहीं।''

भूखा कुत्ता खिसियाया हुआ बैठा था, बोला, ''मैं नहीं भौंकूँगा, चोर चाहे चुरा ले जाए, मुझे क्या फर्क पड़ेगा।''

गधा बोला, ''मैं हल्ला करके मालिक को जगा दूँगा।'' कुत्ता बोला, ''देख गधे भाई, भौंकना हमारा काम है। तू इस पचड़े में मत पड़, वरना कुट जाएगा।''

गधा नहीं माना, जोर-जोर से ढेंचू-ढेंचू करने लगा, धोबी दिन भर का थका-हारा घोड़े बेचकर सो रहा था। उसकी नींद में खलल पड़ा तो उसने लाल होकर सोटे से गधे को कूटकर रख दिया। गधा बेचारा अधमरा हो गया। धोबी के उठने से चोर भाग गए और धोबी फिर जाकर सो गया।

कुत्ता बोला, ''गधे भाई, मैंने कहा था न, जिसका काम उसी को साजे, दूसरा करे तो डंडा बाजे। अब शांति मिल गई न ?''

गधा बेचारा खिसियाकर रह गया।

3 अतिथि-सत्कार

एक आदमी खुद को किसी शहंशाह से कम नहीं समझता था, लेकिन था बेहद कंजूस-मक्खीचूस। जब भी उसके यहाँ कोई मेहमान आता, कोई-न-कोई बहाना करके उसे टरका देता।

एक दिन उसका बचपन का एक पक्का दोस्त उसके घर आया। उसने उसे प्यार से बैठक में बिठाया, उसकी कुशल-क्षेम पूछी और दोनों देर रात तक बचपन के किस्से कहते-सुनते रहे। बहुत रात हो गई तो खाने की बात टालकर उसने अपने दोस्त को भूखा ही सुला दिया।

भोर को दोनों उठे और फिर बातों में डूब गए। थोड़ी देर बाद शहंशाह दोस्त ने दूसरे से कहा, ''आज एकादशी है। हम सबका तो उपवास है। कल दिन का बासी तुम्हें खाने को देंगे नहीं, तुम्हारी तबीयत खराब हो जाएगी और घर में आज कुछ बनेगा नहीं। तुम एक काम करो, घर से निकलो—अगले मोड़ पर बंसी हलवाई की दुकान है, वहाँ जाकर भरपेट कचौड़ी, जलेबी खा लो—तुम्हें मेरी कसम!''

✿

4 एक गलती

एक हकीम था, उसका नाम लुकमान था। एक दिन उसने सोचा, मैं सबको जीवन देता हूँ तो मुझे कौन मार सकता है—कोई नहीं। एक दिन उसकी यमदूत से बहस हो गई। हकीम बोला, ''तुम मुझे नहीं ले जा सकते। मैं तो दूसरों को जीवन देता हूँ, उनकी जान बचाता हूँ।''

गुस्से में यमदूत बोला, ''आज से ठीक आठ दिन बाद तुम्हारी मौत होनेवाली है। मैं आकर तुम्हें ले जाऊँगा। तुम सब उपाय कर लो।''

हकीम ने अपना घर खूब सजा लिया। एक कमरे में बारह कुरसियाँ डालीं और आठवें दिन ग्यारह पर हू-ब-हू अपने जैसे पुतले बिठा दिए और बारहवीं पर खुद बैठ गया।

यमदूत उसे लेने आया तो चक्कर में पड़ गया। वह सोचने लगा कि इसे लेकर नहीं गया तो यमराज को मुँह दिखाने लायक नहीं रहूँगा। उसने काफी अकल लगाई, तभी उसे एक युक्ति सूझी। वह बोला, ''हकीम लुकमान, तुमने अपना घर तो बड़ा अच्छा सजाया है। इसके आगे तो यमराज के महल की सजावट भी फीकी है। बस एक कमी रह गई है⋯ ।''

हकीम लुकमान बोल पड़ा, ''क्या गलती ?''

यमदूत बोला, ''यही गलती।'' इतना कहकर उसने उसे दबोच लिया और यमलोक ले गया।

5 नेकी और बदी

एक गाँव में दो भाई रहते थे। एक का नाम था नेकी और दूसरे का बदी। एक दिन नेकी घर से नौकरी की तलाश में निकला। वह राजा के यहाँ पहुँचा और काम माँगा। राजा बोला, ''मेरी तीन सौ साठ बकरियाँ हैं। उन्हें चराना पड़ेगा, धूप में चराएगा तो एक कटोरी भात मिलेगा और छाया में चराएगा तो एक रोटी और अगर तू नौकरी छोड़ना चाहेगा तो तेरे नाक-कान कटवा लूँगा, अगर मैं नौकरी से हटाऊँगा तो तू मेरे नाक-कान काट लेना।''

नेकी इस करार पर नौकरी करने लगा। कुछ दिनों बाद वह उस नौकरी से ऊब गया और अपने नाक-कान कटाकर नौकरी छोड़ दी। बदी ने उसकी हालत देखी तो उसे बड़ा दुःख हुआ। वह बोला, ''अब मैं राजा की नौकरी करूँगा।''

वह उन्हीं शर्तों पर राजा के यहाँ नौकरी करने लगा। वह जंगल में बकरियाँ चराता और रोज एक बकरी पकाकर खा जाता। इस तरह वह सारी बकरियाँ खा गया और राजा हाथ मलता रह गया।

✿

6 राजा की पहचान

एक राजा अपने मंत्री और नौकर के साथ सैर करने निकला। घूमते-घूमते सब एक घने जंगल में पहुँच गए। वहाँ राजा को बड़ी जोर की प्यास लगी, उसने अपने नौकर से पानी मँगवाया।

नौकर एक कुटिया पर पहुँचा। कुटिया में एक नेत्रहीन साधु रहता था। नौकर कुटिया में जाकर बोला, ''अरे अंधे, थोड़ा पानी दे दे।''

साधु बोला, ''पानी नहीं है। नौकर, यहाँ से चला जा।''

नौकर राजा के पास लौट आया और बोला कि वह साधु तो खच्चड़ है, पानी नहीं दिया। राजा ने पानी लाने मंत्री को भेजा। मंत्री नेत्रहीन साधु के पास पहुँचकर बोला, ''ए अंधा भाई, थोड़ा सा पानी मिलेगा।''

साधु बोला, ''तू मंत्री है तो भी मैं तुझे पानी नहीं दूँगा।'' मंत्री भी वहाँ से खाली हाथ लौट गया। तीसरी दफा खुद राजा कुटिया में पहुँचा और बोला, ''ए महात्माजी, हमें जोर की प्यास लगी है, कृपा करके थोड़ा पानी पिला दो।''

साधु ने कहा, ''महाराज, बैठिए। मैं अभी पानी लेकर आता हूँ।''

राजा बोला, ''हम पानी बाद में पिएँगे, पहले यह बताने की कृपा करें कि आपने हमें कैसे पहचाना कि हम राजा हैं ?''

साधु बोला, ''बोली ही आदमी की पहचान है महाराज, 'अरे' कहनेवाला नौकर था, 'ए' कहनेवाला मंत्री और राजा की बोली में आदर-सत्कार का भाव भरा रहता है, बल्कि भरा होना चाहिए—आप राजा बनने लायक हैं, जो जितने ऊँचे पद पर होता है, उसकी बोली में उतनी ही मिठास होती है।''

7 बुद्धिमान लड़की अनोखा दहेज

बिहार के नालंदा दिले में एक शहर है राजगीर। किसी समय यहाँ एक गरीब चरवाहा रहता था। उसकी एक बेटी थी, जो बहुत बुद्धिमान थी। बकरियाँ चराते हुए एक दिन उसने एक ब्राह्मण युवक को तेज कदमों से कहीं जाते हुए देखा। कौतूहलवश उसने ब्राह्मण को रोककर उसकी जल्दी का कारण पूछा। ब्राह्मण ने बताया कि पूर्णिमा खत्म होने से पहले उसे गंगा नदी में स्नान करना है। नदी तक जल्दी पहुँचने के लिए तेज चलना आवश्यक है। लड़की ने कहा कि गंगा नदी यहाँ से बहुत दूर है, वहाँ पहुँचने तक पूर्णिमा खत्म हो जाएगी। इसलिए सच्ची श्रद्धा से चारागाह के पास वाले तालाब में भी स्नान करो तो गंगा-स्नान के बराबर पुण्य मिलेगा। ब्राह्मण ने उसकी बात मान ली और ऐसा ही किया। वह तालाब में पहली डुबकी लगाकर बाहर निकला तो उसके हाथों में ढेर सारे रत्न-जवाहरात थे। वह खुश हो गया। फिर चरवाहे की बेटी के कहने पर ही उसने एक और डुबकी लगाई, लेकिन इस बार वह कीचड़ से सना हुआ बाहर निकला। इसपर चरवाहे की बेटी ने उससे कहा कि पहली बार तुमने श्रद्धा के साथ पानी में डुबकी लगाई थी इसलिए तुम्हें हीरे-जवाहरात का ईनाम मिला, लेकिन दूसरी बार तुम्हारे मन में लालच आ गया था, इसलिए उसका परिणाम तुम्हें कीचड़ के रूप में मिला। युवा ब्राह्मण उसकी बुद्धिमत्ता देखकर बहुत प्रभावित हुआ और उसने लड़की से विवाह का प्रस्ताव रखा। लड़की ने इस शर्त पर प्रस्ताव मान लिया कि अगर उसके पिता इस विवाह की स्वीकृति देते हैं तो वह ब्राह्मण से विवाह के लिए राजी है।

ब्राह्मण ने चरवाहे को अपना प्रस्ताव बताया तो पहले तो वह नहीं माना, लेकिन ब्राह्मण की सहृदयता देखकर कुछ समय बाद उसे अपनी बेटी से विवाह करने की स्वीकृति दे दी और विवाह संपन्न भी हो गया। विदाई के समय चरवाहे ने अपनी बेटी को दहेज में कुछ देने की इच्छा प्रकट की और ब्राह्मण से कुछ माँगने को कहा। इसपर चरवाहे की लड़की ने चुपके से अपने पति के कान में कहा कि दहेज में एक असाधारण गाय, एक असाधारण भेड़ और एक असाधारण तोता ही माँगना। ब्राह्मण ने ऐसा ही किया और दहेज लेकर अपनी पत्नी के साथ अपने गाँव लौट आया।

चरवाहे की लड़की अपने पति के साथ सुखमय जीवन व्यतीत करने लगी। अपने पिता से शादी में मिला दहेज भी इसमें उसका सहायक था, क्योंकि दहेज में मिला असाधारण तोता इंद्र के दरबार जा सकता था और प्रतिदिन जाता भी था। असाधारण भेड़, पूरे देश की भेड़ों की नेता थी और उसकी गाय कामधेनु के समान थी और बहुत दूध देती थी।

एक बार तोते ने लड़की को बताया कि इंद्र के दरबार में यह घोषित किया गया है कि आने वाले बरसात के मौसम में बैरेन पर्वत और राजगीर की घाटियों के अलावा कहीं बारिश नहीं होगी और पूरे राज्य में अकाल पड़ेगा। चरवाहे की लड़की ने कुछ देर सोचा और अपनी असाधारण भेड़ से कहा कि वह अपने साथियों के साथ मिलकर पूरे बैरेन पर्वत और घाटी की खुदाई कर डाले। फिर उसने गाय से खुदी हुई जमीन पर खाद के लिए गोबर डालने के लिए कहा। इतना हो जाने के बाद उसने अपने पति से कहा कि तैयार जमीन पर धान बो दो। ब्राह्मण अपनी पत्नी के कथन पर थोड़ा आश्चर्यचकित हुआ, लेकिन उसकी बुद्धिमत्ता के बारे में वह जानता था, इसलिए उसने पत्नी का कहना मानकर तैयार जमीन पर धान बो दिए। कुछ समय बाद वहाँ बारिश हुई और धान की बहुत अच्छी फसल हुई। ब्राह्मण दंपती उससे चावल निकालकर आसपास के गाँवों में, जहाँ सूखे के कारण फसल नहीं हुई थी, अन्न पहुँचाने लगा। यह देखकर इंद्रदेव कुपित हो गए। उन्होंने ब्राह्मण की बाकी फसल को नष्ट करने के लिए चूहों को भेजा। तोते ने यह समाचार लड़की को सुनाया तो लड़की ने अपने पति को खेतों की रखवाली के लिए खेतों में बिल्लियाँ रखने की सलाह दी। ब्राह्मण युवक ने ऐसा ही किया और उसकी फसल इंद्र के चूहों से बच गई। यह देखकर इंद्र देव और भी कुपित हो गए और इस बार इंद्र ने बैरेन पर्वत और घाटी में आँधी लाने के आदेश दिए।

तोते ने यह खबर भी पहले ही लड़की को बता दी और लड़की ने अपने पति से पूरे बैरेन पर्वत और घाटी के चारों ओर गहरी खाई खुदवाने को कहा जो ब्राह्मण ने समय रहते करवा दिया। इसलिए जब आँधी आई तो सारे अनाज खाई में जमा हो गया और बरबाद होने से बच गया। इस बार इंद्रदेव लड़की की बुद्धिमत्ता से बहुत प्रभावित हुए और सूखे का आदेश वापस ले लिया। इस प्रकार लड़की की बुद्धिमत्ता और चतुराई से पूरा प्रदेश अकाल से बच गया

✿

8 सोना-माटी

एक राजा था, वह दिन–रात धन कमाने के फेर में पड़ा रहता था। प्रजा पर तरह–तरह के टैक्स लगाकर धन ऐंठना, कमजोर राज्यों पर हमला करके अन्न, धन और सोना लूटना उसका मुख्य काम बन गया था। उसका खजाना सोने–चाँदी से भरा था, लेकिन उसे संतोष नहीं था।

उसके राज्य में एक चमार रहता था। वह रोज दो जोड़ी जूते बनाता था। उनमें से एक जोड़ी जूते बेचकर अपना घर–खर्च चलाता और दूसरी जोड़ी को जरूरतमंद गरीबों, साधु–महात्माओं को दान कर देता था। इसी तरह कभी–कभी वह दोनों जोड़ी जूते दान कर देता और उसका परिवार भूखा सो जाता था।

राजा और चमार एक साथ बूढ़े हुए और एक दिन एक साथ उनकी मृत्यु हो गई। राजा को यमदूत लेने आया। उसने राजा को काँटेदार पाँसे में फँसाया और घसीटकर ले जाने लगा। राजा कराहने लगा। उधर चमार के लिए यमदूत सोने का सिंहासन लेकर आया। चमार बोला, ''हमारे राजा को भी सिंहासन पर ले चलो।''

यमदूत बोला, ''हमारे यहाँ राजा–प्रजा, ऊँच–नीच, जात–पाँत का कोई भेद नहीं होता। जो जैसा करता है, हम उसे वैसा ही फल देते हैं। राजा के खजाने में सोना भरा है तो इसका मतलब यह नहीं कि हम उसे सोने के सिंहासन पर बिठाकर ले जाएँ।''

राजा की कराह सुनकर चमार बड़ा दुःखी हुआ। वह बोला, ''जब तक राजा मेरे साथ सिंहासन पर बैठकर बैकुंठ नहीं जाएगा, तब तक मैं भी नहीं चलूँगा।''

यमदूत बोला, ''अगर तुम अपने आधे पुण्य राजा को दे दो तो मैं राजा को भी सिंहासन पर बिठा लूँगा।'' चमार तैयार हो गया। उसने अपने आधे पुण्य–फल राजा को दे दिए। राजा को भी सिंहासन पर बिठा लिया गया। राजा सोचने लगा, किसी ने ठीक ही कहा है—''करनी भली न हो तो सोना भी माटी है।

9 सेर-सवा सेर

एक अंधा और एक लँगड़ा गहरे दोस्त थे। दोनों ने एक दिन सोचा, कमाने के लिए परदेस चलते हैं। दोनों एक ढोल लेकर चल पड़े। चलते-चलते अँधेरा हो गया। अंधे ने पूछा, "लँगड़े भाई, कितना दिन हुआ है ?"

लँगड़ा बोला, "शाम घिर आई है और सामने ही एक माँद दिख रही है।" दोनों माँद में घुसे तो वहाँ पशु और मनुष्यों की हड्डियों के साथ-साथ सोने-चाँदी के जेवरों का ढेर लगा था।

लँगड़ा बोला, "लगता है, किसी बाघ की माँद है, यहाँ तो खजाना छिपा है। इसे ले चलते हैं।" दोनों चलने को हुए, तभी बाघ की दहाड़ सुनाई दी। अंधा तेजी से ढोल बजाने लगा। अपनी माँद से ढोल की आवाज सुनकर बाघ ने पूछा, "मेरी माँद में कौन है ?" अंदर से अंधे ने पूछा, "तुम कौन हो ?" बाघ ने जवाब दिया, "शेर।" अंधे ने जवाब दिया, "हम सवा शेर हैं।" जवाब सुनकर बाघ डरकर भाग गया।

भागते बाघ को देख एक सियार ने कारण पूछा। बाघ ने सारी कहानी बताई तो सियार कहने लगा, "अरे, वे तो अंधे और लँगड़े हैं। उनसे मत डरो; मेरे साथ चलो।" दोनों गुफा के पास पहुँचे तो अंधे ने चतुराई से काम लेते हुए कहा, "सियार को छोड़ो, बाघ को पकड़ो।" यह सुनकर बाघ फिर से भाग खड़ा हुआ और भागते-भागते बाघों की पंचायत में पहुँचा। उसकी मुसीबत सुनकर सौ बाघ उसके साथ चल पड़े। उनकी दहाड़ सुनकर अंधे और लँगड़े, दोनों एक ऊँचे ताड़ पर चढ़ गए। बाघों ने गुफा में देखा तो कोई नहीं मिला। एक बाघ की नजर ताड़ पर बैठे दोनों पर पड़ गई। बाघ एक के ऊपर एक चढ़कर ताड़ के सिरे तक पहुँच गए और बाघों और दोनों की दूरी जब एक हाथ रह गई तो अंधे ने चिल्लाकर लँगड़े से कहा, "जो बाघ सबसे नीचे है, उसे पकड़ो।"

यह सुनना था कि नीचे दबा बाघ निकलकर भागा, इसी के साथ सब बाघ 'धम्म' से गिरकर मर गए। अंधे और लँगड़े ने चतुराई से अपने दुश्मनों को मात दे दी और उनकी माँद से सोना-चाँदी लेकर अपनी राह चल पड़े।

10 आतिथ्य स्वीकृति

एक गाँव में दो घनिष्ठ मित्र रहते थे। उनके पास कुछ चमत्कारी शक्तियाँ थीं। उनमें से एक किसी भी प्रकार के चावल की गुणवत्ता को परख सकता था तथा दूसरा दोस्त व्यक्ति का चरित्र पढ़ सकने की क्षमता रखता था। एक दिन उन्होंने विश्व भ्रमण करने का विचार किया और तैयारी करके यात्रा पर निकल पड़े। चलते-चलते वे एक राजा के दरबार में पहुँचे। राजा ने उन्हें अपना अतिथि बनने का निमंत्रण दिया, जिसे उन्होंने खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया। किंतु जब भोजन सामने आया तो जो दोस्त चावल की गुणवत्ता परख सकता था, उसने चावल खाने से इनकार कर दिया और जो किसी भी व्यक्तित्व को परखने की क्षमता रखता था, उसने सब्जियाँ खाने से इनकार कर दिया। राजा को जब इस बात की खबर हुई तो उन दोनों को बुला भेजा और उनसे उनकी इस अस्वीकृति का कारण पूछा। तब चावल परखनेवाले दोस्त ने बताया कि हमें भोजन में जो चावल परोसा गया था, उसकी गुणवत्ता अच्छी नहीं थी, क्योंकि वे चावल जहाँ उगाए गए थे, वहाँ पहले श्मशान घाट हुआ करता था, जिस पर बाद में खेती की जाने लगी। उसने कहा कि उन चावलों से उसे शवों और लकड़ियों के जलने की गंध आ रही थी, इसलिए मैंने चावल नहीं खाया। तब राजा ने दूसरे दोस्त से पूछा कि उसने परोसी हुई सब्जियाँ क्यों नहीं खाईं, उसमें उसे क्या कमी नजर आई, उसे तो खुद राजकुमारी ने बनाया था ? तब उसने क्षमा माँगते हुए कहा, ''राजन्! अपराध के लिए क्षमा करें, लेकिन उन सब्जियों से राजकुमारी की साँसों की बदबू आ रही थी। मेरा खयाल है, शायद बचपन में राजकुमारी का लालन-पालन बकरी का दूध पिलाकर किया गया है।'' दोनों की बातें सुनकर राजा हतप्रभ रह गया। जब राजा ने इन कथनों की सत्यता की जाँच करवाई, तब पता चला कि करीब 30 वर्ष पहले वहाँ श्मशान हुआ करता था जहाँ पर चालव उगाए गए थे। रानी ने बताया कि स्वयं दूध पिलाने में असमर्थ होने के कारण राजकुमारी को बकरी का दूध पिलाकर बड़ा किया। राजा अपने अतिथियों की बात की सत्यता प्रमाणित होने पर बहुत खुश हुआ। उसने उन्हें अपना दरबारी बना लिया। अब वे खुशी-खुशी अपना जीवन व्यतीत करने लगे।